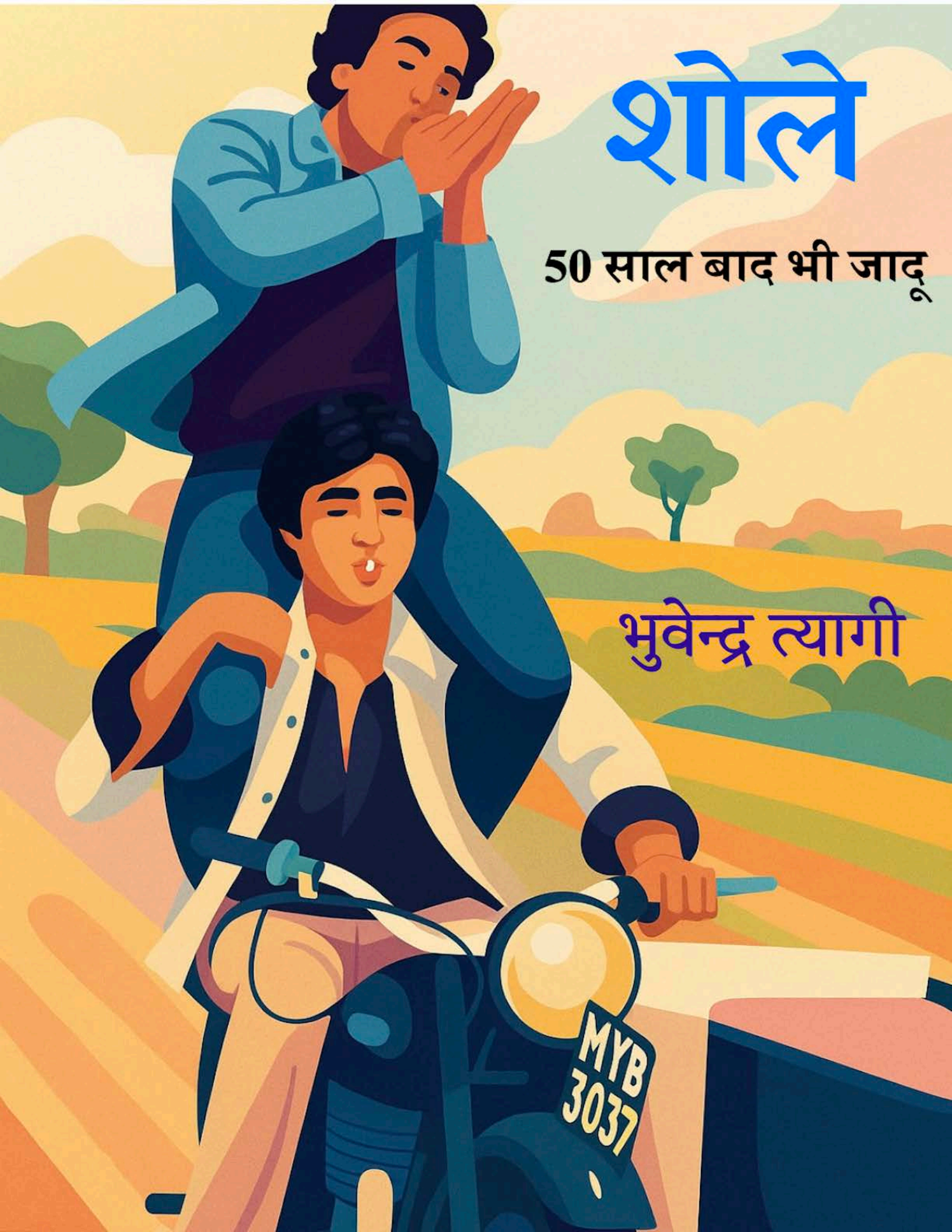
शोले
50 साल बाद भी जादू
भुवेन्द्र त्यागी
MYB
3037

शोले

50 साल बाद भी जादू

भुवेन्द्र त्यागी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2025

© भुवेन्द्र त्यागी

अनुक्रमणिका

‘शोले’ पर स्क्रिप्ट से शुरुआत	3
‘शोले’ आज भी उतनी ही ताजा	5
‘शोले’ की कहानी	8
शोले की स्टार कास्ट	11
50 साल का सफर	14
‘शोले’ पर बोले इसके सितारे	15
1975 की सबसे सफल फिल्म	23
समीक्षा: पहले धोया, फिर चमकाया	25
‘दीवार’ ने पछाड़ा था ‘शोले’ को	27
‘शोले’ का योगदान ‘स्टार वार्स’ जैसा	29
संगीत भी यादगार	31
फिल्म का गंभीर विमर्श	34
विदेश में रिलीज हुई गब्बर की आखिरी चीख के साथ	37
परदे के पीछे की कहानी	41

‘शोले’ पर स्क्रिप्ट से शुरुआत

इस किताब की इस 'शोले' पर एक स्क्रिप्ट से हुई। यह 25 साल पुरानी बात है। विविध शुरुआत भारती के प्रोड्यूसर लोकेंद्र शर्मा 'शोले' के 25 साल होने पर अपने एक घंटे के कार्यक्रम ‘बाइस्कोप की बातें' के लिए 'शोले' पर स्क्रिप्ट चाहते थे। उनके लिए कई कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग के दौरान हम अक्सर इस फिल्म के जादू के बारे में बात किया करते थे। उन्होंने एक दिन फोन करके वे बातें याद दिलाते हुए इसकी स्क्रिप्ट लिखने का जिम्मा मुझे सौंपा। बहुत सी बातें स्मृति में थीं। एक महीने रिसर्च करके नोट्स बनाए । लोकेंद्र जी रेडियो स्क्रिप्टिंग के मेरे गुरु थे और परफेक्शनिस्ट थे । इसलिए नोट्स की डायरी लेकर मैं उनसे मिला। तीन-चार पेजों पर नजर मारते ही उनका चेहरा खिल गया। बोले, ‘जबरदस्त । अब मुकम्मल स्क्रिप्ट लिख डालिए।’

‘बाइस्कोप की बातें' के लिए मैं 'दो बीघा जमीन' सहित कई फिल्मों की स्क्रिप्ट लिख चुका था। उसी अनुभव के आधार पर रात भर बैठकर 'शोले' के लिए स्क्रिप्ट लिखी। लोकेंद्र जी ने पूरे दिन का समय लेकर स्टूडियो आने को कहा। मैं पहुंचा। उन्होंने 'शोले' के टेप के साथ मुझे साउंडट्रैक की नोटिंग के लिए छोड़ दिया। आठ घंटे में पूरे साउंडट्रैक सुनकर मैंने नोटिंग कर दी, जैसे फलां प्रसंग के बाद 37 मिनट 2 सेकंड से 37 मिनट 19 सेकंड तक...

अगले हफ्ते लोकेंद्र जी ने रिकॉर्डिंग कर ली... और फिर 'बाइस्कोप की बातें' पर आया मेरा लिखा वह प्रोग्राम। बाद में लोकेंद्र जी ने बताया था कि उस प्रोग्राम के बारे में देशभर से हजारों खत आए थे। और उनमें से बहुत से झुमरी तलैया से लिखे गए थे।

कुछ साल पहले घर के रिनोवेशन के दौरान मेरी रेडियो स्क्रिप्ट्स की फाइल सैकड़ों फाइलों के बीच छिप गई थी। आखिर 15 अगस्त को जब 'शोले' के 50 साल हुए, तो उसी दिन कई घंटे खंगालकर वह फाइल ढूंढ निकाली। उसमें 25 पेज की वह स्क्रिप्ट भी मिल गई। मजेदार सामग्री है उसमें। क्या संयोग है कि जिस दिन 'शोले' को थिएटर में आए 50 साल हुए, उसी दिन उसके 25 साल होने पर 25 साल पहले लिखी यह स्क्रिप्ट मिली!

यह स्क्रिप्ट देखकर लोकेंद्र जी की भी बहुत याद आई। मैं खुशनसीब हूं कि मुझे जीवन में अनेक विधाओं में पारंगत होने के लिए बेहतरीन गुरु मिले। लोकेंद्र जी से मैंने रेडियो स्क्रिप्टिंग सीखी। मैंने नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव जी से पूछा कि क्या 'शोले' पर एक पुस्तक लिख दूं। तुरंत उनका सकारात्मक उत्तर मिलने पर मैंने एक सप्ताह में यह पुस्तक तैयार कर दी। इसमें वह स्क्रिप्ट तो है ही, शोले के बारे में और भी बहुत दिलचस्प बातें हैं।

‘शोले’ आज भी उतनी ही ताजा

हिंदी सिनेमा के क्लासिक्स गिनने पर सबसे ऊपर जिन फिल्मों का ज़िक्र आता है, उनमें से एक है 'शोले' (1975)। मगर हर काल और हर हाल में सबसे लोकप्रिय फिल्म तो यही है। रमेश सिप्पी की यह फिल्म महज एक मूवी नहीं, बल्कि भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की पहचान बन चुकी है। और अब, जब 15 अगस्त को इसे परदे पर आए 50 साल हो गए, तब भी इसका असर वही है- उतना ही ताज़ा, रोमांचक और दिल में उतर जाने वाला। सचमुच, 50 साल बाद भी परदे पर अमर जादू है ‘शोले'।

1975 में रिलीज हुई रमेश सिप्पी की 'शोले' आज भी उतनी ही ताज़ा लगती है। जय-वीरू की दोस्ती, गब्बर सिंह का खौफ, बसंती की मासूम और चुलबुली अदाएं और ठाकुर का न्याय- हर किरदार अमर गया। आर. डी. बर्मन के संगीत और सलीम-जावेद की लेखनी ने इसे क्लासिक बना दिया। अब, जब ‘शोले' ने 50 साल का सफर तय कर लिया है, तो यह कहना गलत नहीं होगा कि यह फिल्म महज एक मूवी नहीं, बल्कि भारतीय पॉप कल्चर का हिस्सा है। ओटीटी और सोशल मीडिया के दौर में भी इसके संवाद, गाने और किरदार लोगों की जुबान पर हैं।